कहानी का नाट्य रूपांतरण

प्रश्न 1. नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार की मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है?

उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है-

1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों व मानसिक द्वंद्वों की नाटकीय प्रस्तुति में आती है।
2. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने और संवादों को नाटकीय रूप प्रदान में समस्या आती है।
3. संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने और कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

प्रश्न 2. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद-योजना में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर-कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- नए लिखे संवाद कहानी के मूल संवादों से मेल खाते हो।
- नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
- कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।
- संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावशैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।
- संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।

प्रश्न 3. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं?

उत्तर-कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार करते हैं-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
2. एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।
3. दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।
4. दृश्य विभाजन में कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 4. कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है?

उत्तर-कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

- कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।
- कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।
- कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।
- कथा-वस्तु को विभाजित कर के दृश्यों को लिखा जाना चाहिए।
- जो दृश्यों में नहीं आया हो जैसे परिवेश का विवरण या परिस्थितियों पर टिप्पणी उसे मंच सज्जा, पार्श्व संगीत और प्रकाश व्यवस्था के द्वारा दिखाया जाता है
- मानसिक द्वंद्व के लिए स्वगत कथन या वायस ऑवर का प्रयोग करना चाहिए।
- रंगमंच की संभावनाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।

रेडियो नाटक

कैसे बनता है रेडियो नाटक : 'रेडियो नाटक' नाटक का वह रूप है जो रेडियो पर प्रसारित होता है। रेडियो श्रव्य माध्यम है जिसमें दृश्य (विजुअल्स) नहीं होते और न ही दर्शक और अभिनेता आमने-सामने। रेडियो नाटक लेखन सिनेमा या रंगमंच के

लेखन से थोड़ा भिन्न है और कठिन भी। यहाँ आपकी सहायता के लिए न मंच सज्जा तथा न वस्त्र सज्जा है और न ही अभिनेता के चेहरे की भाव भंगिमाएं। आपको सब कुछ संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से ही संप्रेषित करना होता है। अत: रेडियो नाटक लेखन के लिए निम्न बिन्दुओं को मद्देनज़र रखना आवश्यक है –

1. **कहानी का चुनाव-** रेडियो नाटक के लिए आवश्यक है कि कहानी 'एक्शन बेस्ड' न हो। अर्थात् कहानी ऐसी हो जो पूरी तरह एक्शन पर निर्भर न हो। क्योंकि रेडियो पर बहुत अधिक एक्शन का जहाँ प्रभाव उत्पन्न करना मुश्किल होता है वहीँ श्रोताओं को उबाऊ भी लगता है।
2. **समयावधि**-रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट तक की ही होनी चाहिए। क्योंकि रेडियो के श्रोता सिनेमा की तरह 'कैप्टिव ऑडियंस' नहीं हैं जो एक निश्चित समय के लिए एक जगह विशेष पर बैठ कर देखने को बाध्य हों।
3. **पात्रों की संख्या–**चूँकि रेडियो नाटक की समयावधि कम होती है और श्रव्य माध्यम होने के कारण पात्रों को सिर्फ उनकी आवाज़ से ही पहचानना होता है इसलिए रेडियो नाटक के पात्रों की संख्या 5-6 होनी चाहिए।
4. **संवाद और ध्वनि प्रभाव**–रेडियो नाटक में पात्रों, घटनाओं / दृश्यों सम्बंधित समस्त जानकारी संवादों के ही द्वारा प्राप्त होती है। तो उसी के अनुसार संवाद और ध्वनि का निर्माण / चयन किया जाए।

रेडियो नाटक के तत्व -

रेडियो नाटक में ये 3 तत्व महत्वपूर्ण है- 1. भाषा, 2. ध्वनि और 3. संगीत (इन तीनों के कलात्मक संयोजन से विशेष प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।)

1. **भाषा**- भाषा केंद्र में है और यह ध्यातव्य है कि भाषित शब्द की शक्ति लिखित शब्द से अधिक होती है और शब्द प्रयोग ऐसे हों जिनका उच्चारण, वाचिक अभिनय संपन्न हो सके।

2. **ध्वनि और संगीत**- संगीत सामान्यत: दृश्य परिवर्तन और संवाद के बीच के अंतराल को भरने के लिए उपयोग में आता है तथा नाटक की विषय वस्तु और कथ्य के अनुरूप वातावरण के निर्माण के लिए भी। यह वातावरण अदृश्य होता है इसलिए संगीत की आवश्यकता और भूमिका और बढ़ जाती है। शब्दों के माध्यम से तो वातावरण का सृजन होता ही है संगीत का योगदान भी विशिष्ट होता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण बिंदु –

- जिन रचनाकारों ने रेडियो नाटक के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, उनमें से कुछ ये हैं- सिद्धनाथ कुमार, उदय शंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा, गिरिजाकुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल और धर्मवीर भारती। धर्मवीर भारती का गीतिनाट्य अंधा युग पहली बार रेडियो से ही प्रसारित किया गया।
- रेडियो नाटक में नरेटर या सूत्रधार हो सकता है। ऐसा होता रहा है।जो काम नरेटर या सूत्रधार करने वाला है वह पात्रों के संवादों के माध्यम से संपन्न हो जाए तो स्थिति अच्छी मानी जाती हैं।
- इस प्रकार रेडियो नाटक श्रव्य नाटक है। यह गतिशील है। अतीत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों में इसके माध्यम से गमन किया जा सकता है। यह वाचिक भाषा की शक्ति क्षमता का भरपूर उपयोग करता है। कल्पना तत्व से इसका गहरा संबंध है। यह शब्दों के माध्यम से एक पूरा संसार होता है और दृश्य को दृश्य बनाता है। यह अंतर्मन का नाटक है मितव्ययी भी है। न्यूनतम साधनों से अधिकतम प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता भी है। ध्वनि और संगीत का रचनात्मक उपयोग इसके प्रभाव में वृद्धि करता है।

प्रश्न: 1. रेडियो नाटक और सिनेमा या रंगमंच में क्या-क्या असमानता है?

उत्तर: रेडियो एक श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा या रंगमंच एक दृश्य माध्यम है। रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों एवं ध्वनि प्रभावों के माध्यम से संप्रेषित करना पड़ता है। रेडियो नाटक में मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा एवं अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमाओं का अभाव होता है, जबकि सिनेमा या रंगमंच में ये सभी चीजें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

प्रश्न: 2. रेडियो नाटक की अवधि या समय-सीमा पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: सामान्यत: रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट होती है, इसके अनेक कारण होते हैं; श्रोता अधिकतम 15 से 30 मिनट तक ही एकाग्रता बनाकर रेडियो नाटक को सुन सकता है। नाटक यदि अधिक लंबा या उबाऊ महसूस होता है तो वह किसी दूसरे स्टेशन को ट्यून कर सकता है या फिर उसका ध्यान कहीं और जा सकता है।

प्रश्न: 3. रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या के संबंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर: रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों पर आधारित होता है। इसलिए यदि अधिक पात्र/चरित्र अधिक होंगे तो कथा का उचित विकास नहीं हो पाएगा और रेडियो नाटक का स्वरूप प्रभावित होगा। रेडियो नाटक में दृश्यों का अभाव होने के कारण श्रोता को संवादों को सुनकर ही पात्रों के साथ अपना रिश्ता बनाए रखना पड़ता है क्योंकि श्रोता सिर्फ आवाज़ के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है।

प्रश्न: 4. रेडियो नाटक के लिए संवाद लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर: रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है। अत: श्रव्य माध्यम होने के कारण रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों के माध्यम से सम्पन्न होता है; इसलिए सभी पात्रों/ चरित्रों को अपने संवादों में एक-दूसरे को नाम से संबोधित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से श्रोता रेडियो नाटक के संवादों के साथ रिश्ता कायम करते हुए नाटक का भरपूर रसास्वादन कर पाएगा।

प्रश्न: 5. रेडियो को मनोरंजन का सबसे सस्ता और सुलभ साधन क्यों माना गया है?

उत्तर: रेडियो एक छोटा यंत्र/मशीन है जिसे आप आसानी से कहीं भी ले जा सकते हो एवं इसका उपयोग कर सकते हो। ऐसे में भारत का आम आदमी रेडियो के माध्यम से ही देश-विदेश की घटनाओं को जान पाता था, कृषि से जुड़ी विभिन्न जनकारियों को प्राप्त कर पाता था। अत: रेडियो भारत की कृषि प्रधान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए मनोरंजन का बहुत ही सस्ता एवं लोकप्रिय साधन था।

प्रश्न: 6. रेडियो नाटक लिखते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर: रेडियो नाटक लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- ऐसी कहानी का चयन करना चाहिए जो एक्शन प्रधान न हो।
- समय-सीमा का ध्यान रखना चाहिए।
- पात्रों की संख्या कम हो और संवाद छोटे एवं पात्रों के नाम सहित हो
- रेडियो नाटक में सब कुछ ध्वनि प्रभावों के माध्यम से प्रेषित किया जाना है।

प्रश्न:7-कहानी और रेडियो नाटक की समानताएँ बताइए।

उतर- कहानी और रेडियो नाटक में बहुत सी समानताएँ हैं। इन दोनों में एक कहानी होती है। पात्र होते हैं। परिवेश होता है। कहानी का क्रमिक विकास होता है। संवाद होते हैं। द्वंद्व होता है। चरम उत्कर्ष होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नाटक और कहानी की आत्मा के कुछ मूल तत्व एक ही हैं। तथा कहानी और रेडियो नाटक दोनों ही मनुष्यों का मनोरंजन करते हैं।

प्रश्न 8– 'कैप्टिव ऑडियंस' किसे कहते हैं?

उत्तर–सिनेमा या नाटक में दर्शक अपने घरों से बाहर निकलकर किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर एकत्रित होते हैं और इन आयोजनों के लिए प्रयास करते हैं। ये सभी लोग अनजान होते हुए भी एक समूह का हिस्सा बनकर एक साथ सिनेमा या नाटक देखते हैं। ये एक समय विशेष के लिए किसी एक प्रेक्षागृह में एक साथ बैठते हैं अर्थात एक स्थान पर क़ैद किए गए होते हैं। इन्हीं कैद होए हुए दर्शकों को अंग्रेजी में कैप्टिव ऑडियंस कहते हैं।

प्रश्न 9- रेडियो नाटक की कहानी में किन–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

उत्तर— रेडियो नाटक में अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं–

1. कहानी एक घटना प्रधान न हो—कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होनी चाहिए
2. समय सीमा–अवधि 15 से 30 मिनट तक हो सकती है। रेडियो नाटक की अवधि इससे अधिक नहीं होनी चाहिए
3. पात्रों की सीमित संख्या—पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है।

प्रश्न 10- रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभाव और संवादों का विशेष महत्व है जो इस प्रकार है–

- रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियां व चारित्रिक विशेषताएं संवादों के द्वारा ही उजागर होती है।
- नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
- इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथानक को श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है।
- संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है।
- संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

प्रश्न 11. रेडियो नाटक और सिनेमा या रंगमंच में क्या-क्या असमानताएँ है?

उत्तर: रेडियो एक श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा या रंगमंच एक दृश्य माध्यम है। रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों एवं ध्वनि प्रभावों के माध्यम से संप्रेषित करना पड़ता है। रेडियो नाटक में मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा एवं अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमाओं का अभाव होता है, जबकि सिनेमा या रंगमंच में ये सभी चीजें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं अर्थात् हम कह सकते हैं कि रेडियो नाटक में सब कुछ आवाज के माध्यम से सम्पन्न होता है।

प्रश्न 12. रेडियो नाटक के लिए संवाद लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर: रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है। श्रव्य माध्यम में दृश्यों का अभाव होता है। अत: श्रव्य माध्यम होने के कारण रेडियो नाटक में सबकुछ संवादों के माध्यम से सम्पन्न होता है; इसलिए सभी पात्रों/ चरित्रों को अपने संवादों में एक-दूसरे को नाम से संबोधित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से श्रोता रेडियो नाटक के संवादों के साथ रिश्ता कायम करते हुए नाटक का भरपूर रसास्वादन कर पाएगा।